भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-17, अंक-7 मंगलवार, 26.7.94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी जुलाई, 1994	वार्षिक चन्दा-50.00 प्रति अंक : 5.00

प्रगट का राकवच.....राबंधन

युगों से पवित्र प्रेम के बंधन की पुष्टि करता त्यौहार यानि–'रक्षाबंधन'....रक्षाबंधन का नाम सुनते ही अपने आप भीतर में एक पवित्र भावना का जन्म होता है। बहन व भाई के पवित्र प्रेम की नींव पर टिका यह भावनाओं का रिश्ता है....हर त्यौहार की तरह जगत के और प्रगट की निष्ठा वाले भक्तों के 'रक्षाबंधन' में फर्क है। जगत को तो काल, कर्म, माया से डर कर तांत्रिक, ज्योतिष, झाड़-फूंक करने वालों, जादु-टोने वालों के पास जाना पड़ता है जबकि प्रगट की निष्ठा वाले भक्तों को काल, कर्म, माया से सदैव निश्चिंता, निर्भयता रहा करती है कि इस साधु के साथ के संबंध से कोई व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ, प्रसंग मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते...सो, सच्चा 'रक्षक' केवल एक प्रभु व प्रभु के धारक संत ही हैं। जन्म-मरण की चौरासी लाख योनियों के चक्कर से रक्षा करने वाला....!

इतिहास साक्षी है कि द्रौपदी ने भगवान श्री कृष्ण की उंगली कटने पर तुरंत अपनी साड़ी का पल्ला फाड़कर जो बांधा था उसे ध्यान रख भगवान श्री कृष्ण ने उस छोटी-सी पट्टी के बदले में दुःशासन द्वारा चीर हरण किए जाने के समय स्वयं पहुँच कर निरंतर वस्त्र देकर द्रौपदी की लाज रखी ! पर यहां एक बात ध्यान रखें कि-द्रौपदी कैसी ही तेज़ स्वभावयुक्त थी-पर श्री कृष्ण के प्रति निष्ठावान थी। प्रगट भगवान द्वारा भक्त की रक्षा का यह अनुपम उदाहरण है।

और....मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है-''**भगवान तो अपने भक्त की रक्षा करने ही बैठे हैं, जैसे पलकें आँखों की, हाथ कंठ की, माँ-बाप बच्चों की और राजा प्रजा की रक्षा करता है। उसी तरह भगवान हमारी रक्षा करते हैं।**''

अपने भीतर आसुरी तत्वों की जड़ता को पिघाल कर निकालने का जंगम कार्य संत करता है.....समय-समय पर प्रगति कराता है। श्रेयार्थी सरल साधक की सम्पूर्ण जबावदारी प्रभु अपने माथे पर उसके बिना कहे ले लेते हैं और वह सेवक यदि साधु के वचन का पूरा भरोसा रखकर, केवल दो हाथ जोड़ कर रहे तो उस सेवक को हल्का फूल बना कर सर्वदा निश्चिंतता दे देते हैं। जन्म देने वाले माँ-बाप भी जब अपने बच्चे की चिंता करते हैं, तो 'चैतन्य'-आत्मा के माँ-बाप प्रभु व संत इससे कितनी करोड़ गुणा हमारी चिंता करते होंगे वह हमारी कल्पना से बाहर है। ऐसे प्रभु रखे संत हमें कभी अन्य रमणीय भूमिकाओं में जाने नहीं देते-यह आत्मा की बड़ी रक्षा है ही।

आज के युग में अखंड प्रभुधारक संत के सिवा और कोई हमें निश्चिंत बना नहीं सकता.... क्योंकि हर एक

व्यक्ति अपने स्वार्थ, अपनी वृत्तियों का पोषण करने अपने ही दायरे में सीमित है..... केवल प्रभुधारक संत का हृदय ही विशाल सागर के समान है। सच्चा प्रेम, सच्ची रक्षा, आध्यात्मिक प्रगति के लिए सच्चा मार्गदर्शन सच्चे संत द्वारा ही निश्चिंत है। जो स्वयं वृत्तियों के प्रवाह को संयम में रखकर लौकिक-अलौकिक भूमिकाओं से ऊपर जीता होगा, वही हमें इनसे परे कर पायेगा।

सही अर्थ में भगवा का तो स्वभाव ही सहज 'रक्षा' करने का है। भगवान स्वामिनारायण ने तो अपने आश्रितों को काल, कर्म, माया से निर्भय हो जाने के वरदान दिए हैं और.....ऐसी रक्षा करने वाले गुणातीत गुरू हमें हमारे जीवन में साक्षात् मिले हैं। बस! 'निष्ठा' की रक्षा होवे, इन्द्रियों-अंतःकरण के कुसंग से हमारी रक्षा होवे इसी के लिए निरंतर प्रार्थना करते रहना चाहिए।

सो, रक्षाबंधन के पुनीत अवसर पर प्रार्थना कर के भगवान के चरणों में इतनी ही रक्षा माँगे कि हे प्रभु! मुझे आपके भक्तों के भी भक्त, दास के दास बनाना। मुझे कभी भी कैसी भी सेवा करके अभिमान न आए, उससे मेरी रक्षा करना। मुझे विनम्र बनाना, मैं आपके भक्तों के पास अकड़ कर कभी भी न रहूँ- ऐसे जड़-स्वभावों से आप रक्षा करना। हर प्रकार के 'कुसंग' से, प्रकृति के भावों से-ताड़वों से मेरी रक्षा करना। अभाव-अवगुण के पाप से मेरी रक्षा करना।

तो आईए, प्रार्थना स्वरूप इस रक्षाबंधन निमित्त प.पू. काकाजी द्वारा पेरिस से लिखा हुआ आशीष पत्र पढ़े-मनन करें और रोज़ प्रार्थना करें...

'रक्षाबंधन'

पेरिस

गुणातीत समाज के समग्र योगी परिवार को राबंधन के शुभाशिष

गुणातीत समाज के स्वरूपों और ज्योतिर्धरों, देश-विदेश में विचरण करके अंतर की उल्झनों से मुक्तों की रक्षा करके, अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा कराके अपार आनंद कराते हैं जो कि रक्षाबंधन की प्रगट के सब भक्तों को अनोखी भेंट है। तो, सभी मुक्तों निम्न **संकल्प दृढ़ करके रात को सोते समय पाँच बार पठन-मनन करके** और यदि हो सके तो तीन दिन तीन बार लिखकर जीवन में वह मूर्तिमान हो ऐसी तीव्र अभीप्सा करके प्रार्थना करोगे यही विनती है। श्रीजी महाराज, स्वामी और सभी गुणातीत स्वरूपों आपकी प्रत्यक्ष की निष्ठा की रक्षा करें और व्यवहार व सत्संग में सब प्रकार से सद्वृद्धि-तरक्की होती रहे यही अंतर की अभिलाषा सह आपके ही दादुकाका के हेतपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण!

1. हे महाराज, हे स्वामी, हे शास्त्री महाराज, हे योगीजी महाराज, हे सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों! इस परम मंगलकारी दिन पर हमारी धाम, धामी और मुक्तों की प्रत्यक्ष की निष्ठा में जरा-सा भी सूत-सा भी फर्क ना रहे और गुरुहरि व गुरू के प्रति की भावना में तनिक भी फर्क ना पड़े और यदि पड़ा भी हो तो निकल जाए, उसके लिए आप अनुग्रह करना व तब तक **हम किसी को भी उपदेश ना करें तथा किसी का भी दोष देखें ही नहीं-ऐसा बल देना।**

2. हमारी दृष्टि दिव्य बने और **'संबंध वाले मुक्तों दिव्य हैं'**—यह सजागता अखंड रहे ऐसी परिपक्व निष्ठा की इस शुभ दिन पर केवल आपके ही बल से हमारी सम्पूर्ण रक्षा करना। इसके फलस्वरूप भिन्न-भिन्न प्रकृति वाले दो तीन भगवदीयों के साथ रसबस हो पायें ऐसा **सहज बुद्धियोग** देना।

3. .....सभी मिलजुल कर **सुहृदभाव से गुणातीत भावना** और **सर्वदेशीयता** व्यापक पैमाने पर प्रगट कर सकें ऐसी सूझ व अमाप बल देना ऐसी सभी बड़े पुरुषों को अंतर से प्रार्थना।.....पू. कान्तिकाका जैसा वच. अंत्य. प्र.7 के मुताबिक का सत्संग का पक्ष और भगवदीभाव व उनके जैसा शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के साथ का दिव्य संबंध-प्रत्यक्ष स्वरूपों में जिसे जहाँ लगाव हो उससे तुम कर सको ऐसा प्रभु व संतों बल दे यही अंतर की अभिप्सा सह प्रार्थना है.....

.....वच. अंत्य. प्रकरण 2 की सीताजी **जैसी समझदारी** दृढ़ करके सच्ची शांति, सुख और आनंद प्राप्त करना।

''जैसा दूसरों को समझा देने का और दूसरों के दोष देखने का आग्रह रहता है, वैसा ही यदि अपने दोष देखने का व स्वयं समझ लेने का आग्रह हो तो कोई भी कसर रह ही नहीं पाये।'' स्वामी का यह वचन सोचना और बार-बार 1008 बारी लिखना तो सचमुच बल मिल जायेगा।

लि.आपके ही-
दादुकाका के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण
1.8.84 पेरिस

* ....हमें तो प.पू. बापा को अंतर्यामी-सर्वज्ञ दिव्य-सर्वव्यापक-सर्वोपरि मानकर, प्रगट ही मानकर सद्भाव ही बढ़ाना। जिसे जैसी भावना उसे ऐसा फल प.पू. बापा देंगे ही। थोड़े भी शहीदी के लिए तैयार हों वे ही कुछ बढ़िया काम कर जायेंगे। सो निष्ठा वाले-पाँच मिलजुल कर प्रार्थना करना और हम भी करेंगे। हमारी विजय ही विजय और भारी डंका बजेगा। तुम्हें अंतर के आशीर्वाद हैं।

❖ ❖ ❖

अनिर्देश की गतिविधियाँ.....

* अप्रैल' 94 में प.पू. गुरूजी उत्तरी कमान के चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेन्ट जनरल प.भ. वालिया साहब के घर उधमपुर गए थे। वहां बातचीत में प.भ. वालिया साहब ने प.पू. गुरूजी को कहा कि 18 जुलाई को उनका जन्मदिन है, तो उस दिन वे प.पू. गुरूजी के पास रहना चाहेंगे। इस बात को ध्यान रखकर तब ही प.पू. गुरुजी ने 17 जुलाई' 94 चूँकि रविवार था-प.भ. वालिया साहब के जन्मदिन की पूर्व संध्या पर एक छोटी -सी सत्संग सभा का आयोजन करके celebration करने का निर्णय लिया। प.भ. वालिया साहब को धन्यवाद कि इस बात को स्वीकार कर 17 जुलाई की शाम को वे दिल्ली आए और अनिर्देश में एक अद्भुत उत्सव हुआ.....प.भ. वालिया साहब प.पू. साहेब द्वारा सत्संग से अपनेपन से जुड़े हुए हैं और इसी जरिये प.पू. गुरूजी के सम्पर्क में आए ! कुशल, बुद्धिशाली, सूझबुझ वाले विनम्र, शुद्ध-पवित्र चरित्रवान सैनिक होने के साथ-साथ उन्होंने एक भक्ति भरा दिल पाया है। उनकी सहज विनम्रता, सेवकभाव हर एक के दिल को खूब स्पर्श कर जाता है। प.भ. वालिया साब के जन्मदिन निमित्त सभा में प.भ. नासा साहब ने उनका खूब अच्छा परिचय दिया। प.पू. गुरूजी ने प.भ. वालिया साहब को आशीर्वादरूप कार्ड और साथ ही प.भ. अमृत पटेल साहब द्वारा बनाया प.भ. वालिया साहब का बहुत ही सुन्दर व हुबहु स्कैच पोर्ट्रिट दिया। इस पर प.पू. गुरूजी ने लिखा था कि 'संतों को बौद्धिक भावना से नहीं, परन्तु भावात्मक बुद्धि से निहारे-वह वालिया साहब !' इतने कम समय में उन्होंने गुणातीत स्वरूपों की खूब प्रसन्नता पा ली है। प.भ. वालिया साहब ऐसे भक्त हैं जिन्होंने स्वयं तो आध्यात्मिक प्रगति करी ही है, उनका प्रयास है। इस तरह जन्मदिन के इस उत्सव के दिव्य वातावरण में सभी ने आनंद किया।

रात को मंदिर में ही रूक कर 18 जुलाई' 94 की सुबह प.पू. गुरूजी की पूजा में उपस्थित रहकर प.भ. वालिया साहब ने धून-भजन, स्वामी की बातों की कथावार्ता का लाभ लिया और फिर वापिस उधमपुर चले गए.....

* पिछले महीने 19 जुलाई को ऐसी खबर मिली कि इंग्लैंड में प.पू. पप्पाजी को अचानक दिल का दर्द होने के कारण अस्पताल में दाखिल करना पड़ा और उन्हें I.C.U. में रखा गया। 22 जुलाई को प.पू. पप्पाजी की एन्जयोग्राफी कराने पर पता चला कि उनके हार्ट की मुख्य नली में ब्लॉकेज है। सभी डॉक्टरों ने मिलकर बाई बास सर्जरी करने का ही निर्णय लिया। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब भी वहां पहुँच गए थे। हम सभी के पास तो केवल एक अमोघ शस्त्र **'भजन'**.....सो यह समाचार सुनते ही केन्द्रों में भजन शुरू हो गया। 25 जुलाई को करीब साढ़े तीन-चार घंटे प.पू. पप्पाजी की बाई पास सर्जरी

हुई.... दिल्ली में उसी दिन ओप्रेशन के समय 11.30 से 4.30 अखंड धून रखी गई...ओप्रेशन एकदम अच्छी तरह से हो जाने का फोन द्वारा समाचार जब मिला तब सभी के प्राण में जैसे प्राण आए... प.पू. पप्पाजी की तबियत अब दिन-प्रतिदिन अच्छी हो रही है। उनका स्वास्थ्य हर प्रकार से अब अच्छा ही रहे उसके लिए हम सब को खूब धून-भजन-प्रार्थना निरंतर चालू ही रखना है। पू. गुरूजी सभी संतों-बहनों व सभी भक्तों प.पू. पप्पाजी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए निरंतर भजन-प्रार्थना कर रहे हैं।

यदि भीतर में टटोलेंगे तो ख्याल आयेगा कि हमारे भजन में ही कसर होने के कारण ऐसे प्रसंग खड़े कर के भी प्रभु हम से नियमित तीव्र भजन करने की आदत डलवाना चाहते हैं। जैसे गाड़ी में टायर पंक्चर होने पर ही कैसे 'स्टीपनी' याद आ जाती है? वर्ना तो, सफर में हम स्टीपनी को कहां याद करते हैं? ठीक इसीतरह 'तीव्र भजन' भी हम ऐसे एन मौके पर ही करने लग पड़ते हैं ! पर यदि हमेशा ही खूब लगन से, महिमा से निरंतर ऐसा तीव्र भजन करे की हम एक आदत ही डाल ले, तो भगवत्स्वरूप संतों को हमारे लिए यूं प्रसंग खड़े ही न करने पड़े....सो अब हम निरंतर ऐसा तीव्र भजन करते हो जाएं जिससे कि प.पू. पप्पाजी जैसी विभूतियों को हमें यूं मोड़ने ऐसे साधन लेने न पड़े और उनका स्वास्थ अब खूब लम्बे अरसे तक हर प्रकार से खूब अच्छा ही रहे.....

* 22 जुलाई.....'गुरुपूर्णिमा' के पवित्र अवसर पर अनिर्देश में सुबह 6.30 से 8.00 बजे तक धून-भजन, कथावार्ता का कार्यक्रम रखा गया। उस दिव्य वातावरण में सभी खूब आनंदित हो गए थे और प.पू. गुरूजी द्वारा करी गई कथा ने सभी का चैतन्य जागृत कर दिया। इस दिन प.पू. गुरूजी को सरप्राईज देने बहनों ने एक केक बनाई थी जिस पर लिखा था– 'हे पप्पाजी ! get well soon... **सात समुन्दर पार से** 'पप्पा' जल्दी आ जाना **आपका मुकुंद** !' प.पू. गुरूजी की ओर से प.पू. पप्पाजी को यह प्रार्थना लिखी थी, क्योंकि उस दौरान प.पू. पप्पाजी को heart का pain हुआ था। केक पर लिखी प्रार्थना पढ़कर प.पू. गुरूजी का दिल भर आया। उनके face से स्पष्ट पता चल रहा था कि कितनी हद तक प.पू. गुरूजी को प.पू. पप्पाजी से अतिशय प्रेम-लगाव है। सभी हरिभक्तों ने गुरूपूजन करके स्वयं के जीवन की धन्यता मानी.....और जीवन में प्रथम भगवान व संत का ही स्थान रखकर जीने का संकल्प किया।

❖ ❖ ❖

स्वामी की बातें

344. उपासना, नियम तथा भक्ति में जितनी कसर रहेगी, इतनी हममें कमी रहेगी। धन देने वाला मिल जाये, लड़का देने वाला मिल जाये या देह की बीमारी मिटाने वाला मिल जाये उससे उपासना में फर्क पड़ जाता है..... प्र-5,108

345. जगत में दान पुण्य, सदाव्रत बहुत करते हैं, लेकिन द्रौपदी के चीर और विदुर की भाजी व सुदामा के चावल इतने ही लिखे गये ! भगवान तो अधर्मी का भी उद्धार करने वाले हैं, पतित पावन हैं और अशरण को शरण देने वाले हैं; लेकिन भगवान का आसरा करें तो ! इस पर अजामेल व वेश्या की नियम रखने की बात करी। यूं आधार-बिना दृढ़ता रहती नहीं। आधार क्या? तो-कुएं में डूब रहे हो तब पेड़ की कोई जड़ हाथ में आ जाये तो डूबेंगे नहीं, ऐसी जो दृढ़ता रहती है; उस पर इन्द्र की बात करी कि नारदजी के वचन से स्वयं के भाई वामनजी को भगवान जानकर उनका ध्यान करा तो चार ब्रह्महत्या का पाप टला। प्रगट सूर्य से उजाला होता है प्रगट जल से गंदगी धुलती है और प्रगट चिंतामणि से द्रव्य की खोट टलती है। वैसे ही प्रगट भगवान मिलने से मोक्ष होता है। प्र-5,109

346. महाराज को जब भी देखें तब बातें ही करते दिखाई पड़ते। ज्ञानी, प्रीति वाला व दासभाव ये तीन अंग हैं। इसमें ज्ञानी श्रेष्ठ है। स्तुति-निंदा का वचनामृत पढ़वाया व कहा कि प्रगट मूर्ति के सिवा दूसरे आधार जो हैं वह तो हिम्मत देने के लिए हैं.....प्रगट मूर्ति का जिसे आसरा हुआ है उसके हाथ सभी मुद्दे आ गए हैं। उसे तो कुछ करना रहा ही नहीं और काल, कर्म माया से परे हुआ है। उस पर बात करी कि बकरी को सिंह की सहायता मिली हुई थी तो बकरी का कोई नाम नहीं दे सका.....यूं प्रगट भगवान और प्रगट साधु की सहायता से काल, कर्म, माया कोई नाम नहीं ले सकते। प्र-5,110

347. मावाभाई ने महाराज को माया का बंधन न हो-यह पूछा, परन्तु व्यवहार का कुछ नहीं पूछा। सो, महाराज ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हें माया का बंधन नहीं होगा और झीणाभाई ने भी सेवा की माँफ करी। प्र-5,14

348. पशु, मनुष्य, वृक्ष-सभी में कामवासना का विषय है। वह किसी से छूटता नहीं, वह तो हृदय ग्रंथि है। इसलिए **'निजात्मानं ब्रह्मरूपं'** यूं स्वयं का रूप मानना वह बात अलग पड़ती है; जैसे भीमनाथ की दूसरी ओर खोदे तो पानी आए परन्तु पत्थर आवे नहीं और इस ओर पहले घाव में ही पत्थर आते हैं। वैसे ही ब्रह्मरूप मानने में कोई मुश्किल स्पर्श नहीं करती ! यह महाराज का दृढ़ रहस्य है। प्र-5,115

349. हरिशंकरभाई ने पूछा कि मावाभाई पर जैसे भगवान प्रसन्न हैं वैसे किस तरह भगवान प्रसन्न हो? तब स्वामी बोले कि आज तो भगवान प्रसन्न हुए हैं, सो-आज्ञा पालनी। दूसरा कोई साधन करना रहा नहीं है। पाँच-प्रण दृढ़ पालने।

प्र5,116

350. अंतिम प्रकरण का दूसरा वचनामृत पढ़वा कर बात करी कि महाराज के बिना अन्य में माल मानता हो व और कुछ देखने की इच्छा रखता हो वह तो सूर्य के आगे दिया करे ऐसा है और वह सत्संगी ही कहां है? उस पर कुम्हार के लड़के ने जो महिमा कही थी वह बात करी और यह बात जब समझ में आएगी तब पागल हो जाएंगे। पागल नहीं होते वह तो भगवान की इच्छा है और एकांतिक का संग मिलना दुर्लभ है। भगवान से काम होवे उतना उससे होता है, क्योंकि सभी को भगवान का संबध नहीं रहता। इसलिए एकांतिक का लक्षण समझना.....

... अभी तो जोग है तब तक ख्याल नहीं पड़ता, परन्तु जोग नहीं होगा तब काल आने पर जैसा दुःख होता है वैसा जीव को दुःख होगा और आँखों से आँसू बहेंगे... ऐसा जोग मिला है वह पूर्व का पुण्य है.....भगवतप्रसादजी महाराज को कागज में लिखवाया कि जो काम करो उसके मालिक नहीं बनना, भगवान के माथे पर डाल देना और भगवान का विश्वास रखना।

प्र5,117

351. जो भगवान के भक्त बनें हैं और पंचवर्तमान पालते हैं वे तो प्रकृति पुरूष से पर होकर बैठें है।

प्र5,118

352. प्रगट भगवान को पहचान कर जो एक प्रणाम करता है वह आत्यंतिक मोक्ष-जो अक्षरधाम है उसे पाता है। उसके सिवा तो बाकी सभी धाम को काल खा जाता है। गायकवाड़ सरकार के घर जन्म हो और मूली-मोगरी के लिए भले ही रोता है, पर गद्दी का मालिक तो बन चुका ही है। अधिक बात क्या कहें। प्र5,119

353. अंतिम प्रकरण का 35वां वचनामृत पढ़ाकर बात करी कि यदि भगवान के प्रति मनुष्यभाव रह जाए तो कल्याण नहीं होगा। इसलिए महाराज ने बार-बार दिव्यभाव और मनुष्यभाव दोनों एक समझने की बातें करी हैं और फिलहाल रात को गढ़डा वाले नारायण प्रधान जो पढ़ते हैं उसमें बहुत अच्छी बातें आती हैं। वह जो सुनेगा उसे खूब लाभ होगा और दूसरों को खोट रहेगी।

प्र-5,120

❖ ❖ ❖

नम्र विनती

पिछले कई वर्षों से प्रकाशित होती 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका आपको प्रति मास मिलती ही होगी। 'भगवत् कृपा' का वार्षिक शुल्क देने के लिए अभी तक हमने कभी आग्रह नहीं रखा। परन्तु वर्तमान स्थिति में बढ़ती हुई मँहगाई को मद्देनजर रखते हुए हरिभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन व अपेाा है। कि वे 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका का वार्षिक शुल्क जो कि पहले 30/-रु. था ह्यअब 50/-रु. समय पर भेजने की कृपा करें ताकि भविष्य में भी इस पत्रिका द्वारा हम आपका मार्गदर्शन व प्रभु सेवा निरंतर करते रहें।

याद रखें कि : **वार्षिक शुल्क**

देश में - **Rs. 50**

विदेश में - **U.K.- { 27**

U.S.A.-$ 40

व्रतोत्सवसूची

1. दि. 3.8.94	बुधवार	एकादशी, व्रत
2. दि. 17.8.94	बुधवार	पवित्रा एकादशी, व्रत
3. दि. 21.8.94	रविवार	रक्षाबंधन, श्रावणी पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
A-103, Ashok Vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane
Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : Chowdhry Mudran Kendra, 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi Tel. : 2262473